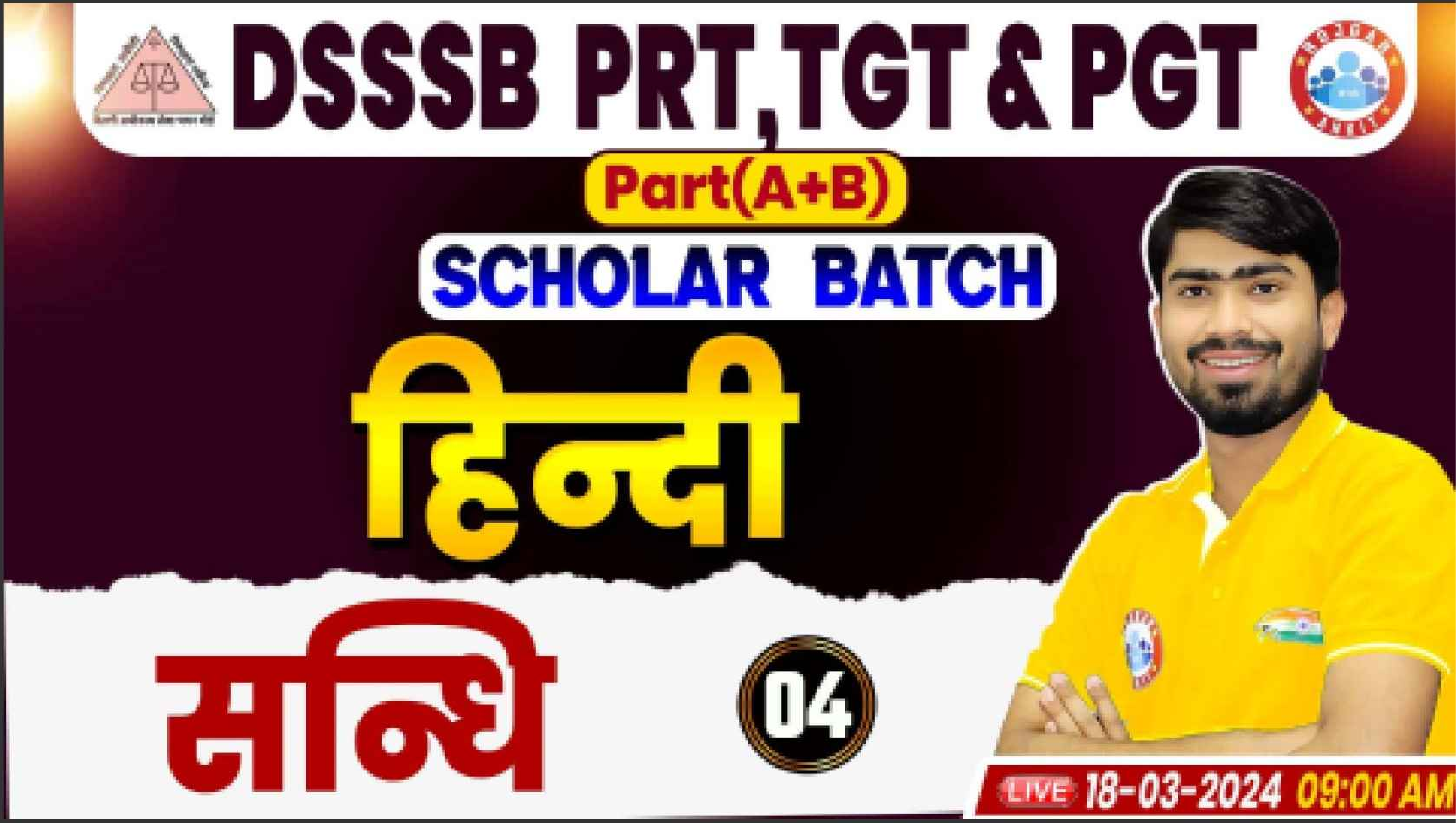
DSSSB PRT, TGT & PGT
Part(A+B)
SCHOLAR BATCH
हिन्दी
सन्धि
04
LIVE 18-03-2024 09:00 AM

य, व, र, ल   श, ष, स, ह   अं

04. यदि म के आगे कोई अन्तस्थ व्यंजन या ऊष्म व्यंजन आए तो म अनुस्वार में बदल जाता है।

जैसे - सम् + सार = संसार   सम् + युक्त = संयुक्त

सम् + योग = संयोग   सम् + लग्न = संलग्न

सम् + रक्षक = संरक्षक   सम् + शोधन = संशोधन

सम् + हार = संहार   सम् + वाद = संवाद

05. यदि अ , आ को छोड़कर किसी भी स्वर के आगे स् आता है स् के स्थान पर ष् हो जाता है।

जैसे – अभि + सेक = अभिषेक

(इ) वि + सम = विषम

(इ) नि + सेध = निषेध

(उ) सु + सुप्त = सुषुप्त

ष् + त = ट   ष् + थ = ठ

06. ष् के पश्चात त या थ आने पर उसके स्थान पर क्रमश: ट और ठ हो जाता है।

जैसे –

आकृष् + त = आकृष्ट	उत्कृष् + त = उत्कृष्ट
दुष् + त = दुष्ट	षष् + थ = षष्ठ
पृष् + थ = पृष्ठ	सृष् + ति = सृष्टि
षष् + थ = षष्ठ	पुष् + त = पुष्ट
निकृष् + त = निकृष्ट	इष् + त = इष्ट

त् + च/छ = च्

07. त् के बाद यदि च, छ हो तो त् का च् हो जाता है। जैसे –

उत् + चारण = उच्चारण

जगत् + छाया = जगच्छाया

उत् + चरित = उच्चरित

सत् + चरित्र = सच्चरित्र

शरत् + चन्द्र = शरच्चन्द्र

त् + ज/झ → ज्

08. त् के बाद यदि ज, झ हो तो त् ज् में बदल जाता है। जैसे –

सत् + जन = सज्जन

विपत् + जाल = विपज्जाल

जगत् + जननी = जगज्जननी

उत् + ज्वल = उज्ज्वल

उत् + झटिका = उज्झटिका

त् + ट = ट्ट
त् + ड = ड्ड

09. त् के बाद यदि ट, ड हो तो त् क्रमशः ट्, ड् में बदल जाता है। जैसे –

बृहत् + टीका = बृहट्टीका / बृहट्टीका

उत् + डयन = उड्डयन / उड्डयन

त् + ल → ल्

10. त् के बाद यदि ल हो तो त् , ल् में बदल जाता है। जैसे –

उत् + लास = उल्लास

तत् + लीन = तल्लीन

उत् + लेख = उल्लेख

उत् + लंघन = उल्लंघन

11. त् के बाद यदि श् हो तो त् का च् और श् का छ हो जाता है।

जैसे –

उत् + श्वास = उच्छ्वास

सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र

उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट

12. त के बाद यदि ह हो तो त् के स्थान पर द् और ह के स्थान पर ध् हो जाता है। जैसे –

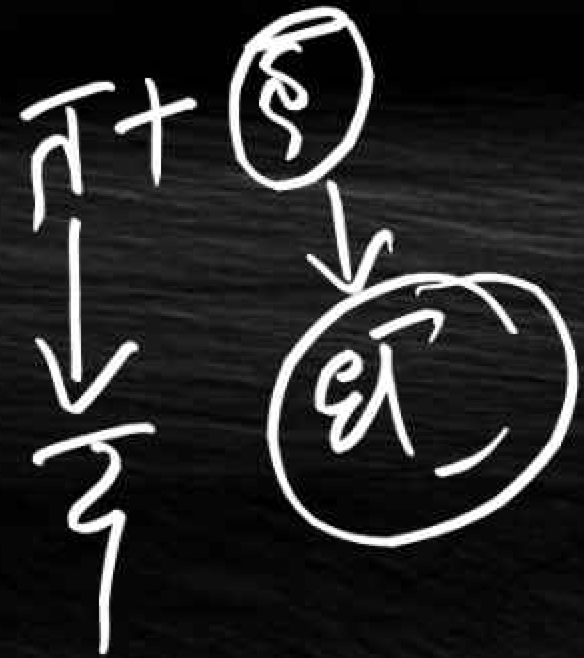

तत् + हित = तद्धित

उत् + हार = उद्धार

उत् + हत = उद्धत

उत् + हरण = उद्धरण

13. यदि ऋ, र, ष, के बाद न व्यंजन आता है तो न का ण हो जाता है। जैसे-

अपवाद

भर् + अन = भरण	प्र + नय = प्रणय
भूष् + अन = भूषण	प्र + न = प्रण
प्र + मान = प्रमाण	हर + न = हरण
ऋ + न = ऋण	पुरा + न = पुराण
कृष् + ना = कृष्णा	परि + नय = परिणय
विष् + नु = विष्णु	परि + नत = परिणत

03. विसर्ग सन्धि – यदि विसर्ग के बाद किसी स्वर अथवा व्यंजन का मेल हो तब विसर्ग में जो परिवर्तन होता है। उसे विसर्ग सन्धि कहते है।

दुः + जन = दुर्जन
→ अर् (र्)

दुः + उपयोग = दुरुपयोग

01. यदि विसर्ग के बाद च या छ हो तो विसर्ग श् में, ट या ठ हो तो ष् में और त या थ हो तो स् में बदल जाता है। जैसे –

निः + चय = निश्चय

नमः + ते = नमस्ते

निः + छल = निश्छल

दुः + तर = दुस्तर

निः + ठुर = निष्ठुर

ः + च/छ = श्

ः + ट/ठ = ष्

ः + त/थ = स्

मनः + ताप = मनस्ताप

धनुः + टंकार = धनुष्टंकार

निः + तेज = निस्तेज

निः + तार = निस्तार

मरुः + थल = मरुस्थल

2. यदि विसर्ग के पहले अ और बाद में अ अथवा प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा पांचवा वर्ण अथवा य, र, ल, व एंव ह हो तो विसर्ग का ओ हो जाता है। जैसे ओ

अ मनः + अनुकूल = मनोनुकूल

मनः + अभिलाषा = मनोभिलाषा

अ मनः + योग = मनोयोग

परः + अक्ष = परोक्ष

अधः + गति = अधोगति

मनः + अभिराम = मनोभिराम

वयः + वृद्ध = वयोवृद्ध

यशः + वर्धन = यशोवर्धन

तपः + भूमि = तपोभूमि

तेजः + मूर्ति = तेजोमूर्ति

यशः + दा = यशोदा

तपः + बल = तपोबल

पयः + धन = पयोधन

मनः + हर = मनोहर

मनः + रथ = मनोरथ

सरः + रुह = सरोरुह

सरः + वर = सरोवर

पयः + धि = पयोधि

मनः + वांछा = मनोवांछा

अधः + वस्त्र = अधोवस्त्र

3. यदि विसर्ग के पहले अ, आ को छोड़कर कोई दूसरा स्वर हो और बाद में अ, आ, उ, ऊ या तीसरा , चौथा, पांचवां वर्ण या य, र, ल, व में से कोई हो तो विसर्ग का र या अर् हो जाता है। जैसे –

नि: + अर्थक = निरर्थक

दु: + जन = दुर्जन

दु: + आत्मा = दुरात्मा

आशी: + वाद = आशीर्वाद

नि: + धन = निर्धन

प्रादु: + भाव = प्रादुर्भाव

नि: + यात = निर्यात

नि: + मम = निर्मम

आवि: + भाव = आविर्भाव

यजु: + वेद = यजुर्वेद

निः + बल = निर्बल

दुः + बल = दुर्बल

बहिः + मुख = बहिर्मुख

दुः + ऊह = दुरूह

धनुः + विद्या = धनुर्विद्या

निः + धारण = निर्धारण

दुः + उपयोग = दुरुपयोग

4. यदि विसर्ग के पहले इ या उ हो तो क्, ख्, प्, फ् के रहने पर विसर्ग का ष् हो जाता है। जैसे –

उ दुः + कर्म = दुष्कर्म

इ निः + कंटक = निष्कंटक

निः + कपट = निष्कपट

बहिः + कार = बहिष्कार

दुः + प्रकृति = दुष्प्रकृति

आविः + कार = आविष्कार

निः + फल = निष्फल

निः + प्राण = निष्प्राण

5. यदि विसर्ग के बाद र हो तो विसर्ग लुप्त हो जाता है और उस के पहले का स्वर दीर्घ हो जाता है। जैसे –

नि: + रोग = नीरोग

नि: + रज = नीरज

नि: + रस = नीरस

नि: + रुज = नीरूज

6. यदि विसर्ग के पूर्व अ हो तथा बाद में क या प हो तो विसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे-

प्रातः + काल = प्रातःकाल

अतंः + करण = अंतःकरण

अधः + पतन = अधःपतन

पयः + पान = पयःपान

रजः + कण = रजःकण

दुःख

विसर्ग

अपवाद – (i) नमः एंव पुरः में विसर्ग का स् हो जाता है। जैसे -

नमः + कार = नमस्कार

पुरः + कार = पुरस्कार